हिंदी विभाग
विश्वभारती, शांतिनिकेतन
पश्चिम बंगाल - 731235

चयन आधारित क्रेडिट पद्धति (सी.बी.सी.एस.) के अनुसार एम.ए.हिंदी दो वर्षीय पाठ्यक्रम

कोर्स कोड: MA 124

पाठ्यक्रम विवरणिका
(शैक्षणिक सत्र : जुलाई, 2025 से आरंभ)

प्रस्तावना: हिंदी में मास्टर ऑफ आर्ट्स (एम.ए.) एक व्यापक एवं सांस्कृतिक रूप से समृद्ध स्नातकोत्तर कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य छात्रों की हिंदी भाषा, साहित्य और संस्कृति की समझ को गहराई प्रदान करना तथा उन्हें गहन अध्ययन और अनुसंधान के लिए प्रेरित करना है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में ऐसे विवेकशील, संवेदनशील और आलोचनात्मक दृष्टिकोण से युक्त व्यक्तित्व की आवश्यकता है, जो समाज में व्याप्त नकारात्मक प्रवृत्तियों के विरुद्ध समानता, न्याय और बंधुत्व की भावना को सशक्त बना सके। साहित्य का अध्ययन न केवल मानवीय चेतना का विस्तार करता है, बल्कि उसमें निहित मूल्यों के माध्यम से मानवीयता और नैतिकता की दृढ़ स्थापना भी करता है। इस पाठ्यक्रम में भाषा, आलोचना और सिद्धांतों का अध्ययन जहाँ छात्रों को विचारधारात्मक गहराई प्रदान करता है, वहीं कविता, कहानी, नाटक और निबंध जैसे रचनात्मक विधाओं का अध्ययन उनकी व्यावहारिक समझ और अभिव्यक्ति क्षमता को सशक्त बनाता है। एम.ए. हिंदी का यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों ही स्तरों पर सक्षम बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इस पाठ्यक्रम में सम्मिलित वैकल्पिक विषयों की व्यवस्था छात्रों को अपनी रुचियों और अनुसंधान की प्रवृत्तियों के अनुसार विषय चयन की स्वतंत्रता प्रदान करती है।

उद्देश्य(Objectives) इस पाठ्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य स्नातक स्तर के पश्चात विद्यार्थियों को हिंदी विषय के गहन अध्ययन के लिए प्रेरित करना है। पाठ्यक्रम कुल चार सेमेस्टरों में विभाजित है। चौथे सेमेस्टर में विद्यार्थियों को वैकल्पिक पाठ्यक्रमों के चयन की सुविधा प्रदान की गयी है, जिनमें कुछ पाठ्यक्रम अंतःविषय (interdisciplinary) दृष्टिकोण को विकसित करने में सहायक हो सकते हैं। साथ ही, प्रोजेक्ट कार्य को सभी विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य किया गया है, जो शोध की प्रारंभिक समझ विकसित करने और आगे की शैक्षणिक यात्रा का मार्ग प्रशस्त करने में सहायक हो सकता है। पाठ्यक्रम का एक अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य भाषा और समाज के परस्पर जटिल संबंधों की पहचान करना है, जिससे विद्यार्थी देश, समाज और विश्व के व्यापक सरोकारों से जुड़ सकें। इसके माध्यम से उनके भाषा-कौशल, लेखन क्षमता और संप्रेषण दक्षता का भी सर्वांगीण विकास संभव हो सकता है। पाठ्यक्रम में भाषा विज्ञान, हिंदी साहित्य, भारतीय ज्ञान परम्परा, भारतीय साहित्य तथा प्रयोजनमूलक भाषा विज्ञान जैसे विषयों का समावेश किया गया है, जो विद्यार्थियों के बौद्धिक क्षितिज का विस्तार करते हुए उन्हें समग्र दृष्टि से सक्षम बनाने में सहायक होंगे।

परिणाम(Outcomes) इस पाठ के अध्ययन एवं शिक्षण के परिणामस्वरूप निम्न प्रमुख बिंदु सामने आते हैं:

1. हिंदी भाषा की मूलभूत समझ- इस पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्रों को हिंदी भाषा की प्रकृति, ध्वन्यात्मकता तथा संरचना के वैज्ञानिक पक्षों की सुस्पष्ट जानकारी प्राप्त होगी।
2. भाषा की व्यावहारिक दक्षता- भाषा के व्यावहारिक पक्ष का ज्ञान प्राप्त कर छात्र प्रभावी संप्रेषण कौशल विकसित कर सकेंगे।
3. शोध एवं अध्ययन की दिशा में उन्मुखता- उच्च शिक्षा के क्षेत्र में हिंदी की भूमिका को समझते हुए छात्र इसे शोध और अध्ययन के प्रभावी माध्यम के रूप में ग्रहण कर सकेंगे।
4. सांस्कृतिक बोध और व्यक्तित्व विकास- हिंदी के साथ-साथ भारतीय साहित्य का अध्ययन छात्रों में सांस्कृतिक जागरूकता और व्यक्तित्व निर्माण में सहायक सिद्ध होगा।

5. मूल्य-बोध का विकास- साहित्य के अध्ययन से नैतिकता, सामाजिक समरसता, न्याय एवं संवेदनशीलता जैसे मानवीय मूल्यों की समझ विकसित होगी।
6. आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास- साहित्यिक विषयवस्तु पर सहमति-असहमति की विवेकशील दृष्टि विकसित होगी, जिससे वैचारिक स्पष्टता आएगी।
7. ऐतिहासिक और समकालीन साहित्य का मूल्यांकन- साहित्य को प्राचीन से समकालीन संदर्भों में समझने की क्षमता विकसित होगी, जिससे युगबोध और साहित्य के महत्व का विश्लेषण संभव होगा।
8. तुलनात्मक अध्ययन और शोध क्षमता- भारतीय एवं पश्चिमी साहित्य-संस्कृति के तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से छात्रों में विश्लेषणात्मक और शोधपरक दृष्टिकोण का विकास होगा।
9. सौंदर्यशास्त्रीय ज्ञान- प्राचीन और आधुनिक भारतीय तथा पश्चिमी काव्यशास्त्र व सौंदर्य सिद्धांतों के गहन अध्ययन से विश्लेषणात्मक क्षमता में वृद्धि होगी।
10. भाषिक दक्षता और नवाचार- छात्र हिंदी भाषा में नवाचार के साथ व्यवहारिक दक्षता और भाषिक निपुणता प्राप्त करेंगे।

शिक्षण-प्रशिक्षण विधियाँ: इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षण प्रक्रिया में कक्षा-व्याख्यान, समूह-चर्चा, विषय-आधारित सेमिनार, वाद-विवाद, लिखित परीक्षाएँ तथा अन्य शिक्षण-अभ्यासात्मक गतिविधियाँ सम्मिलित की जाएंगी, जिससे अध्ययन अनुभव अधिक प्रभावशाली और समृद्ध बन सके।

पाठ्यक्रम विवरणिका: यह पाठ्यक्रम वर्ष 2025 के प्रथम सेमेस्टर से लागू किया जाएगा। पाठ्यक्रम की संरचना, प्रश्नपत्रों के प्रारूप तथा अंक-विभाजन में आवश्यक एवं उपयुक्त संशोधन किए गए हैं। इसके साथ ही, प्रस्तावित पुस्तकों की सूची को भी अद्यतन किया गया है। एम.ए. हिंदी का यह पाठ्यक्रम एक दो वर्षीय स्नातकोत्तर कार्यक्रम है, जिसे दो भागों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक भाग में दो-दो सेमेस्टर होंगे।

परीक्षा संरचना एवं अंक-विभाजन
आंतरिक मूल्यांकन : 10 अंक
मुख्य परीक्षा : 40 अंक

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (2×10) : 20 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न (3×5) : 15 अंक
वस्तुनिष्ठ प्रश्न (1×5) : 5 अंक

मुख्य परीक्षा की अवधि : 3 घंटे

पाठ्यक्रम विवरण

पत्र संख्या	शीर्षक	क्रेडिट
1	हिंदी साहित्य का इतिहास: आदिकाल से रीतिकाल	6
2	भारतीय ज्ञान परम्परा के संवाहक आरम्भिक कवि	6
3	भाषाविज्ञान	6
4	भारतीय ज्ञान परंपरा के संवाहक मध्यकालीन कवि	6
5	हिंदी साहित्य का इतिहास: आधुनिककाल	6
6	आधुनिकता की अभिव्यक्ति एवं सांस्कृतिक पूर्व पीठिका	6
7	हिंदी भाषा	6
8	हिंदी कथा साहित्य	6
9	नाटक एवं निबंध	6
10	आधुनिक कविता: संवेदना के नवीन स्तर	6
11	भारतीय साहित्य का तुलनात्मक परिदृश्य	6
12	भारतीय काव्यशास्त्र	6
13	पाश्चात्य काव्यशास्त्र	6
14	हिंदी आलोचना	6
15	डिज़र्टेशन / प्रोजेक्ट वर्क	6
16	तुलसीदास (वैकल्पिक-1)	6
16	जयशंकर प्रसाद (वैकल्पिक-2)	6
16	प्रेमचंद (वैकल्पिक-3)	6
16	अस्मितामूलक विमर्श (वैकल्पिक-4)	6
16	कथेतर गद्य (वैकल्पिक-5)	6
16	व्यावसायिक हिंदी (वैकल्पिक-6)	6
16	लोक साहित्य (वैकल्पिक-7)	6
16	रंगमंच और हिंदी के नाटक (वैकल्पिक-8)	6

पत्र-1 हिंदी साहित्य का इतिहास: आदिकाल से रीतिकाल

पाठ्यक्रम का उद्देश्य एवं परिणाम: हिंदी साहित्य के विकासक्रम और उसमें आए विभिन्न परिवर्तनों के साथ साहित्य इतिहास लेखन की आवश्यकता, प्रक्रिया और उपयोगिता का विश्लेषणात्मक ज्ञान होगा; जिससे उनकी साहित्य इतिहास सम्बन्धी ज्ञान में समृधि होगी जिसका उपयोग वे विभिन्न साहित्यिक गतिविधियों एवं परीक्षाओं में कर सकेंगे।

पाठ्यविषय : -

1. साहित्य इतिहास लेखन की परंपरा, इतिहास दर्शन की पद्धतियाँ एवं सिद्धांत, साहित्येतिहास लेखन की प्रवृत्तियाँ, साहित्येतिहास के पुनर्लेखन की समस्याएँ, कालविभाजन और उसकी समस्याएं
2. आदिकाल: पृष्ठभूमि, नामकरण, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, सिद्ध, नाथ, जैन, रासो तथा लौकिक साहित्य सम्बन्धी प्रतिनिधि रचनाकार और उनकी रचनाएँ
3. भक्तिकाल: भक्ति आंदोलन का अखिल भारतीय स्वरूप, उद्भव की पृष्ठभूमि एवं विभिन्न मत, प्रमुख संप्रदाय एवं उनकी विशेषताएँ
4. निर्गुण भक्ति धारा: निर्गुण संत तथा सूफी कवि, प्रतिनिधि रचनाकार और उनकी रचनाएँ, काव्य विशेषताएँ, प्रवृत्तियाँ एवं विचारधारा
5. सगुण भक्ति धारा: रामकाव्य एवं कृष्णकाव्य, अष्टछाप कवि एवं उनकी साहित्यिक भूमिका, प्रमुख सम्प्रदाय, काव्य विशेषताएँ, प्रवृत्तियाँ एवं विचारधारा, प्रतिनिधि रचनाकार और उनकी रचनाएँ,
6. रीतिकाल: पृष्ठभूमि, रीतिसिद्ध, रीतिबद्ध, रीतिमुक्त काव्य, काव्य विशेषताएँ, प्रवृत्तियाँ एवं विचारधारा
7. रीतिकाल की अन्य प्रमुख काव्य धाराएँ, प्रतिनिधि रचनाकार और उनकी रचनाएँ

संदर्भ ग्रंथ : -

1. हिंदी साहित्य का इतिहास- रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
2. हिंदी साहित्य की भूमिका- हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल, दिल्ली
3. हिंदी साहित्य का उद्भव और विकास- हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल, दिल्ली
4. हिंदी साहित्य का आदिकाल- हजारीप्रसाद द्विवेदी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना
5. हिंदी साहित्य का अतीत (भाग-1 एवं 2), विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी, दिल्ली
6. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती, इलाहाबाद
7. हिंदी साहित्य का आधा इतिहास, सुमन राजे, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली
8. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, बच्चन सिंह, राधाकृष्ण, दिल्ली
9. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, रामकुमार वर्मा, लोकभारती, इलाहाबाद
10. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, गणपतिचन्द्र गुप्त, लोकभारती, इलाहाबाद

पत्र-2 भारतीय ज्ञान परम्परा के संवाहक आरम्भिक कवि

पाठ्यक्रम का उद्देश्य एवं परिणाम: भारतीय ज्ञान परम्परा के संवाहक आरम्भिक हिंदी कवियों एवं उनकी रचनाओं का विशिष्ट ज्ञान होगा, जिससे आरम्भिक हिंदी कवियों एवं उनकी रचनाओं की समझ में वृद्धि होगी; साहित्यिक समृद्धि का उपयोग वे साहित्यिक गतिविधियों के उन्नयन एवं परीक्षाओं में कर सकेंगे।

पाठ्यविषय : -

1. सिद्ध साहित्य: हिन्दी काव्यधारा, राहुल सांकृत्यायन, सरहपा, 2, 4, 5, 6, 7
2. नाथ साहित्य: गोरखबानी, पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल, पद 1 से 10
3. रासो साहित्य: पृथ्वीराज रासो, माताप्रसाद गुप्त, कयमास वध
4. अमीर खुसरो: माधव हाडा, बिन बूझ पहेलियाँ, 1-10
5. विद्यापति पदावली: बेनीपुरी, पद- 1,2,4,9,12,14,15,18,28,34
6. कबीरदास: कबीर, हजारीप्रसाद द्विवेदी, आरंभ से 15 पद
7. जायसीः पद्मावत, वासुदेवशरण अग्रवाल, नागमती वियोग खंड 341 से 359 तक

संदर्भ ग्रंथ : -

1. अमीर खुसरो: माधव हाडा,
2. विद्यापति पदावली: बेनीपुरी, लोकभारती, इलाहाबाद
3. कबीर, हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल, दिल्ली
4. कबीर, विजयेन्द्र स्नातक, राधाकृष्ण, दिल्ली
5. सूफीमत: साधना और साहित्य, रामपूजन तिवारी, ज्ञानमंडल, वाराणसी
6. जायसी, रामपूजन तिवारी, राधाकृष्ण, दिल्ली
7. जायसी, विजयदेवनारायण साही, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद
8. गोरखबानी, पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल, आर्यावर्त संस्कृति संस्थान, दिल्ली
9. नाथ सिद्धों की बानियाँ, हजारीप्रसाद द्विवेदी, नागरीप्रचारणी सभा, काशी
10. पिताम्बत दत्त बड़थ्वाल, हिंदी काव्य में निर्गुण संप्रदाय, अवध पब्लिशिंग हाउस, लखनऊ
11. पद्मावत और जायसी की दुनिया, मुजीब रिजवी, राजकमल, दिल्ली
12. अकथ कहानी प्रेम की, पुरुषोत्तम अग्रवाल, राजकमल, दिल्ली
13. सिद्धों की साधना, रमेशचंद्र पाण्डेय, लोक साधना केंद्र, वाराणसी
14. मध्ययुगीन हिंदी संत साहित्य और रवीन्द्रनाथ, रामेश्वर मिश्र, विश्वविद्यालय, वाराणसी
15. अमीर खुसरो, बहादुर मिश्र

पत्र-3 भाषाविज्ञान

पाठ्यक्रम का उद्देश्य एवं परिणाम: इस पत्र के अध्यनोपरांत भाषाविज्ञान की विशिष्ट समझ विकसित होगी। प्राप्त ज्ञान का उपयोग भाषा सम्बन्धी नियमों एवं उनके व्यवहारिक उपयोग के साथ प्रतियोगी परीक्षाओं कर सकेंगे।

पाठ्यविषय : -

1. भाषा और भाषा विज्ञान: परिभाषा, स्वरूप एवं व्याप्ति, भाषा और सम्प्रेषण, भाषा व्यवहार, भाषा-संरचना, भाषिक-प्रकार्य, अध्ययन की पद्धतियाँ एवं दिशाएँ, वर्णनात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक
2. स्वनप्रक्रिया: स्वनिम की अवधारणा, स्वनों का वर्गीकरण, स्वन, स्वनिम और सहस्वन, स्वन परिवर्तन के कारण, स्वरूप और शाखाएँ, स्वनगुण, स्वनिम विज्ञान, स्वनिमिक विश्लेषण, वागवयव और उनके कार्य
3. रूपविज्ञान एवं रूपिमविज्ञान: रूप, रूपिम एवं सहरूप, शब्द और पद, रूपप्रक्रिया का स्वरूप और शाखाएँ, रूपिम की अवधारणा और भेद, अर्थदर्शी और संबंधदर्शी, संबंधदर्शी रूपिम के भेद और प्रकार्य
4. वाक्यविज्ञान: अवधारणा, वाक्य रचना के आधार, अभिहितान्व्यवाद और अन्विताभिधानवाद, वाक्य के भेद, वाक्य विश्लेषण, निकटतम अवयव विश्लेषण, गहन-संरचना और वाह्य-संरचना।
5. अर्थविज्ञान – अर्थ की अवधारणा, शब्द और अर्थ का संबंध, अर्थ प्रतीति के साधन, पर्यायता, अनेकार्थक, अर्थ परिवर्तन के प्रकार एवं दिशाएं।

सन्दर्भ ग्रंथ : -

1. सामान्य भाषाविज्ञान, बाबूराम सक्सेना, हिन्दी साहित्य सम्मलेन, प्रयाग
2. भाषाविज्ञान की भूमिका, देवेन्द्रनाथ शर्मा, राधाकृष्ण, दिल्ली
3. भाषा विज्ञान, भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद
4. भाषा, ब्लूमफिल्ड, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
5. अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान: सिद्धांत और व्यवहार, रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा
6. भाषा विज्ञान रसायन, कैलाशनाथ पाण्डेय
7. भाषा और समाज, रामविलास शर्मा
8. भाषा विज्ञान रसायन, कैलाशनाथ पाण्डेय, गाजीपुर साहित्य संवाद, गाजीपुर
9. हिंदी भाषा की संरचना, भोलानाथ तिवारी, वाणी, दिल्ली

पत्र- 4 भारतीय ज्ञान परंपरा के संवाहक मध्यकालीन कवि

पाठ्यक्रम का उद्देश्य एवं परिणाम: इस पत्र के अध्ययन के बाद छात्र हिंदी के महत्वपूर्ण मध्यकालीन कवियों एवं उनकी रचनाओं से परिचित होंगे, जिससे उनकी साहित्यिक समृद्धि में वृद्धि होगी। साथ ही, इस जानकारी का उपयोग वे साहित्यिक गतिविधियों के अतिरिक्त प्रतियोगी परीक्षाओं में भी कर सकेंगे।

पाठ्यविषय : -

1. सूरदास, भ्रमरगीतसार, रामचंद्र शुक्ल, 1 से 15
2. तुलसीदास, रामचरितमानस, उत्तरकांड 101 से 130
3. मीराबाई की पदावली, परशुराम चतुर्वेदी, पद- 26 से 35
4. केशवदास: रामचंद्रिका, विश्वनाथप्रसाद मिश्र, छठवां प्रकाश
5. देव की दीपशिखा: पद 26 से 35
6. बिहारी रत्नाकर: 1 से 35
7. सेनापति, ऋतुवर्णन 1 से 5
8. भूषण ग्रंथावली: विश्वनाथप्रसाद मिश्र, कवित्त 408 से 417
9. घनानंद कवित्त: पद 1 से 10
10. जगन्नाथदास रत्नाकर, उद्दव शतक, जगदीश गुप्त, 1, 2, 4, 6, 7, 20, 26, 35, 40, 107

सन्दर्भ ग्रंथ : -

1. रीतिकाव्य की भूमिका, नगेंद्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
2. केशव का आचार्यत्त्व, विजयपाल सिंह, राजपाल एंड संस, दिल्ली
3. बिहारी का नया मूल्यांकन, बच्चन सिंह, लोकभारती, इलाहाबाद
4. देव और उनका काव्य, नगेंद्र,
5. घनानंद, लल्लन राय, साहित्य अकादमी, दिल्ली
6. रीतिकाव्य संग्रह: जगदीश गुप्त
7. रीतिकाव्य, नंदकिशोर नवल, राजकमल, दिल्ली
8. गोस्वामी तुलसीदास, रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
9. सूरदास, ब्रजेश्वर वर्मा, लोकभारती, इलाहाबाद
10. रीतिकाव्य की इतिहासदृष्टि, सुधीन्द्र कुमार, वाणी, दिल्ली
11. भक्तिआन्दोलन और सूरदास काव्य, मैनेजर पाण्डेय, वाणी, दिल्ली
12. लोकवादी तुलसीदास, विश्वनाथ त्रिपाठी, राधाकृष्ण, दिल्ली

पत्र-5 हिंदी साहित्य का इतिहास: आधुनिककाल

पाठ्यक्रम का उद्देश्य एवं परिणाम: इस पत्र के अध्ययन के उपरांत छात्र साहित्य इतिहास के आधुनिककाल की विशेषताओं और प्रवृत्तियों से परिचित हो सकेंगे। आधुनिककाल की विभिन साहित्यिक विधाओं की ऐतिहासिक यात्रा से परिचित होंगे जिस ज्ञान का उपयोग वे साहित्यिक उन्नयन एवं प्रतियोगी परीक्षाओं में कर सकेंगे।

पाठ्यविषय : -

1. आधुनिक काल की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, सन् 1857 की राजक्रांति और पुनर्जागरण
2. भारतेन्दु युग- प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ।
3. द्विवेदी युग- प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ।
4. हिन्दी स्वच्छंदतावादी चेतना का अग्रिम विकास: छायावादी काव्य, प्रवृत्तियाँ, प्रमुख साहित्यकार रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ
5. उत्तरछायावादी काव्य की विविध प्रवृत्तियाँ – प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता, अकविता, नवगीत, समकालीन कविता, प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ।
6. हिन्दी गद्य की प्रमुख विधाएँ, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध, संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा, यात्रा वृतांत, डायरी, रिपोर्ताज आदि की विकास यात्रा,
7. हिन्दी आलोचना का उद्भव और विकास, दक्खिनी हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त परिचय।
8. उर्दू साहित्य का संक्षिप्त परिचय, हिन्दीतर क्षेत्रों तथा देशान्तर में हिन्दी भाषा और साहित्य।

सन्दर्भ ग्रन्थ : -

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2. हिन्दी साहित्य उद्भव और विकास, हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल, दिल्ली
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास, संपा. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
4. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, बच्चन सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
5. हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास, सुमन राजे, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली
6. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, रामस्वरूप चतुर्वेदी, इलाहाबाद
7. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
8. महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण, रामविलास शर्मा

पत्र-6 आधुनिकता की अभिव्यक्ति एवं सांस्कृतिक पूर्व पीठिका

पाठ्यक्रम का उद्देश्य एवं परिणाम: इस पत्र के अध्ययन के बाद छात्र हिंदी के महत्वपूर्ण आधुनिक एवं सांस्कृतिक धारा के कवियों एवं उनकी रचनाओं से परिचित होंगे, जिससे उनकी साहित्यिक समृद्धि में वृद्धि होगी। प्राप्त ज्ञान का उपयोग वे साहित्यिक गतिविधियों के अतिरिक्त प्रतियोगी परीक्षाओं में भी कर सकेंगे।

पाठ्यविषय : -

1. भारतेंदु हरिश्चंद्र: कृष्ण भक्ति के पद/ हिंदी उन्नति पर व्याख्यान, 1-20
2. मैथिलीशरण गुप्त: साकेत, नवम सर्ग
3. हरिऔध: प्रियप्रवास, प्रथम सर्ग
4. जयशंकर प्रसाद: कामायनी, चिंता सर्ग
5. निराला: राम की शक्ति पूजा
6. पंत: आधुनिक कवि पंत, परिवर्तन, मौन निमंत्रण
7. महादेवी वर्मा: पंथ होने दो अपरिचित, सब बूझे दीपक जला लूं, अली मैं कन-कन को जान चली, यह मंदिर का दीप
8. दिनकर: उर्वशी, तृतीय अंक
9. जानकी वल्लभ शास्त्री: राधा, कविता एक
10. नागार्जुन: बादल को घिरते देखा है, हरिजन गाथा

सन्दर्भ ग्रन्थ : -

1. जयशंकर प्रसाद, नंददुलारे बाजपेई, भारतीय भंडार, इलाहाबाद
2. प्रसाद का काव्य, प्रेमशंकर, भारतीभंडार, इलाहाबाद
3. छायावाद, नामवर सिंह, राजकमल, दिल्ली
4. कामायनी एक पुनर्विचार, मुक्तिबोध, राजकमल, दिल्ली
5. निराला की साहित्य साधना, रामविलास शर्मा, राजकमल, दिल्लीर
6. रामधारी सिंह दिनकर, विजेंद्र नारायण सिंह, साहित्य अकादेमी
7. दिनकर के काव्य में इतिहास एवं राजनीति, सुभाष चन्द्र रॉय, गौरव प्रकाशन, दिल्ली
8. मैथिलीशरण गुप्त, नंदकिशोर नवल, राजकमल, दिल्ली
9. महादेवी, शचीरानी गुर्टू
10. सुमित्रानंदन पंत, डॉ. नगेन्द्र
11. जानकी वल्लभ शास्त्री, मारुतिनंदन पाठक
12. नागार्जुन की कविता, अजय तिवारी, वाणी प्रकाशन
13. राधा, जानकी वल्लभ शास्त्री

पत्र-7 हिंदी भाषा

पाठ्यक्रम का उद्देश्य एवं परिणाम: इस पत्र के अध्ययनोपरांत भाषा की विशिष्ट समझ विकसित होगी। प्राप्त ज्ञान का उपयोग भाषा सम्बन्धी ज्ञान एवं उनके व्यवहारिक उपयोग के साथ प्रतियोगी परीक्षाओं कर सकेंगे।

पाठ्यविषय : -

1. हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमिः प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ, वैदिक तथा संस्कृत और उनकी विशेषताएँ, मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा - पालि, शौरसेनी, अर्धमागधी, मागधी, अपभ्रंश और उनकी विशेषताएँ, आधुनिक आर्यभाषाएँ और उनका वर्गीकरण
2. हिन्दी का भौगोलिक विस्तारः हिन्दी की उपभाषाएँ, पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी तथा पहाड़ी और उनकी बोलियाँ, पूर्वी एवं पश्चिमी हिन्दी में अंतर, खड़ी बोली, ब्रजभाषा और उसकी विशेषताएँ
3. हिन्दी का भाषिक स्वरूप: हिन्दी की स्वनिम् व्यवस्था, खंड्य, खंडेयतर, रचना, उपसर्ग, प्रत्यय, समास रूपरचना- लिंग, वचन और कारक व्यवस्था, हिन्दी: संज्ञा, सर्वनाम विशेषण और क्रियारूप, हिन्दी वाक्य रचना अन्विति
4. हिन्दी के विविध रूप- संपर्क-भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा के रुप में हिंदी, संचार भाषा, हिन्दी की सांविधानिक स्थिति
5. हिन्दी में कम्प्यूटर सुविधाएँ - आंकड़ा, संसाधन और शब्द - संसाधन, मशीनी अनुवाद, हिन्दी भाषा शिक्षण

संदर्भ ग्रन्थ : -

1. हिंदी भाषा, हरदेव बाहरी, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद

1. हिंदी भाषा, भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद

2. भारतीय आर्यभाषा और हिंदी, सुनीति कुमार चटर्जी, राजकमल, दिल्ली

3. हिन्दी भाषा का इतिहास, धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दुस्तानी, प्रयाग

4. हिंदी भाषा का उद्गम और विकास, उदय नारायण तिवारी, भारती भंडार, प्रयाग

5. प्रयोजनमूलक हिंदी, रघुनन्दन प्रसाद शर्मा, विश्वविद्यालय, वाराणसी

6. हिंदी भाषा का इतिहास, धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दुस्तानी एकेडमी, प्रयाग

7. भाषा का समाजशास्त्र, सुभाष शर्मा, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली

पत्र-8 हिंदी कथा साहित्य

पाठ्यक्रम का उद्देश्य एवं परिणाम: इस पत्र के अध्ययन के बाद छात्र हिंदी के महत्वपूर्ण कथाकारों एवं उनकी रचनाओं को जान सकेंगे, जिससे उनकी साहित्यिक समृद्धि में वृद्धि होगी। साथ ही, इस जानकारी का उपयोग वे साहित्यिक गतिविधियों के अतिरिक्त विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में भी कर सकेंगे।

पाठ्यविषय : -

1. प्रेमचंदः गोदान
2. हजारीप्रसाद द्विवेदीः बाणभट्ट की आत्मकथा
3. अज्ञेयः शेखर एक जीवनी
4. फणीश्वरनाथ रेणु, मैला आँचल
5. कहानी : निर्मल वर्मा: परिंदे, कमलेश्वरः खोयी हुई दिशाएँ, राजेंद्र यादव, जहां लक्ष्मी कैद है, मन्नू भंडारीः त्रिशंकु, कृष्णा सोबतीः बादलों के घेरे, उषा प्रियंवदाः वापसी

संदर्भ ग्रंथ : -

1. हिंदी कहानी का इतिहास, गोपाल राय, राजकमल,दिल्ली
2. कहानी: नई कहानी, नामवर सिंह, लोकभारती, इलाहाबाद
3. हिंदी उपन्यास का विकास, मधुरेश, लोकभारती, इलाहाबाद
4. हिंदी कहानी का विकास, मधुरेश, लोकभारती, इलाहाबाद
5. कथाकार अज्ञेय, चंद्रकांत बांदिवडेकर,
6. हजारीप्रसाद द्विवेदी, चौथीराम यादव,
7. रेणु की जीवनी, भारत यायावर, सेतु, दिल्ली
8. रेणु की तलाश, भारत यायावर, सेतु, दिल्ली
9. प्रेमचंद, हंसराज रहबर, फरसाईट पब्लिकेशन, दिल्ली
10. प्रेमचंद और उनका युग, रामविलास शर्मा, राजकमल,दिल्ली
11. हिंदी उपन्यास: एक विस्तृत अध्ययन, जगदीश भगत, आनंद प्रकाशन, कलकत्ता
12. प्रेमचंद और भारतीय समाज, आशीष त्रिपाठी, राजकमल,दिल्ली

पत्र-9 नाटक एवं निबंध

पाठ्यक्रम का उद्देश्य एवं परिणाम: इस पत्र के अध्ययन के उपरांत छात्र हिन्दी के प्रमुख नाटकों एवं निबंधों के मर्म को समझ सेकेंगे, हिन्दी के प्रमुख नाटकों एवं निबंधों में वर्णित विषय की विशेषताओं को चिह्नित कर सकेंगे । अध्ययन के उपरांत प्राप्त जानकारी का उपयोग वे साहित्यिक गतिविधियों के साथ विविध प्रतियोगी परीक्षाओं में कर सकेंगे।

पाठ्यविषय : -

1. जयशंकर प्रसाद- चंद्रगुप्त
2. मोहन राकेश- आधे-अधूरे
3. अँधा युग- धर्मवीर भारती
4. रामचन्द्र शुक्ल- चिंतामणि, भाव या मनोविकार, करुणा, कविता क्या है, लोकमंगल की साधनावस्था, रसात्मकबोध के विविध रूप
5. हजारीप्रसाद द्विवेदी- अशोक के फूल, बसंत आ गया है, भारतीय संस्कृति की देन, भारतवर्ष की सांस्कृतिक समस्या, मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है

सन्दर्भ ग्रंथ : -

1. हिन्दी नाटक - बच्चन सिंह
2. हिन्दी नाटक उद्भव और विकास, दशरथ ओझा, राजपाल एंड संस, दिल्ली
3. जयशंकर प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन, जगन्नाथ प्रसाद शर्मा
4. प्रसाद के नाटक: स्वरूप और संरचना, गोविन्द चातक
5. हिंदी का गद्य साहित्य, राम्स्चंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
6. रंग दर्शन, नेमिचंद्र जैन,
7. रामचंद्र शुक्ल, शिवनाथ
8. रामचंद्र शुक्ल, मलयज, राजकमल प्रकाशन
9. मोहन राकेश और उनके नाटक, गिरीश रस्तोगी
10. गुरुजी की खेती-बारी, विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल, दिल्ली

पत्र-10 आधुनिक कविता: संवेदना के नवीन स्तर

पाठ्यक्रम का उद्देश्य एवं परिणाम: इस पत्र के अध्ययन के बाद छात्र हिंदी के महत्वपूर्ण आधुनिक धारा के कवियों एवं उनकी रचनाओं से परिचित होंगे, जिससे उनकी साहित्यिक समृद्धि में वृद्धि होगी। साथ ही, इस जानकारी का उपयोग वे साहित्यिक गतिविधियों के अतिरिक्त विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में भी कर सकेंगे।

पाठ्यविषय : –

1. अज्ञेय : असाध्य वीणा
2. मुक्तिबोध : अँधेरे में
1. 3. सर्वेश्वर : पिछड़ा आदमी, सौंदर्यबोध
3. धूमिल : पटकथा
4. श्रीकांत वर्मा : कोसल में विचारों की कमी है, तीसरा रास्ता, मगध
5. केदारनाथ सिंह : उत्तर कबीर
6. विनोद कुमार शुक्ल : रायपुर बिलासपुर संभाग, कितना बहुत है
7. अशोक वाजपेयी : विदा, वापसी
8. ज्ञानेंद्रपति : ट्राम में एक याद, विज्ञान शिक्षक से छोटी लड़की का एक सवाल
9. अनामिका : वृद्धाएं धरती का नमक है, चिट्ठी लिखती हुई औरत, खुरदरी हथेलियां

सन्दर्भ ग्रंथ : –

1. नयी कविता और अस्तित्ववाद, रामविलास शर्मा, राजकमल, दिल्ली
2. कविता के नये प्रतिमान, नामवर सिंह, राजकमल, दिल्ली
3. अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्याएँ, रामस्वरूप चतुर्वेदी
4. अज्ञेय की कविता : एक मूल्यांकन, चन्द्रकान्त बांदिवड़ेकर, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
5. मुक्तिबोध : ज्ञान और संवेदना, नन्दकिशोर नवल, राधाकृष्ण, दिल्ली
6. कविता का देशकाल, मुक्तेश्वर नाथ तिवारी, साहित्य निकेतन, कानपुर
7. कुछ पूर्वग्रह, अशोक वाजपेयी, राजकमल, दिल्ली
8. फ़िलहाल, अशोक वाजपेयी, राजकमल, दिल्ली
9. चकिया से दिल्ली, कामेश्वर प्रसाद सिंह,
10. अनामिका पर केन्द्रित साखी, सदानंद साखी

पत्र-11 भारतीय साहित्य का तुलनात्मक परिदृश्य

पाठ्यक्रम का उद्देश्य एवं परिणाम: इस पत्र के अध्ययन के बाद छात्र भारतीय साहित्य के महत्वपूर्ण रचनाकारों एवं उनकी रचनाओं से परिचित होंगे, जिससे उनकी साहित्यिक समृद्धि में वृद्धि होगी। साथ ही, इस जानकारी का उपयोग वे साहित्यिक गतिविधियों के अतिरिक्त विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में भी कर सकेंगे।

पाठ्यविषय : -

1. तुलनात्मक साहित्य, परिभाषा और स्वरूप, भारतीय साहित्य, स्वरूप और विशेषताएँ, तुलनात्मक साहित्य में अनुवाद की भूमिका
2. वेद, पुराण, रामायण, महाभारत एवं कालिदास के नाटकों का सामान्य परिचय और भारतीय साहित्य पर उनका प्रभाव
3. बांग्ला साहित्य, हिंदी अनुदित गीतांजलि: आरंभिक 10 कविताएँ
4. उर्दू साहित्य, नजीर अकबरावादी : प्रारंभिक दस कविताएँ
5. तमिल साहित्य सुब्रह्मण्यम भारती(हिंदी अनुदित) कविता संख्या 11 से 20 तक

संदर्भ ग्रन्थ : -

1. भारतीय साहित्य, नगेन्द्र, साहित्य, चिरगाँव, झाँसी
2. भारतीय साहित्य की भूमिका, रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3. भारतीय साहित्य, सियाराम तिवारी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
4. संस्कृत साहित्य का इतिहास, बलदेव उपाध्याय, शारदा मंदिर, वाराणसी
5. बांग्ला साहित्य का इतिहास, सुकुमार सेन
6. तमिल साहित्य, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास
7. सुब्रमण्यम भारती : संकलित कविताएँ एवं गद्य
8. उर्दू साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास- एहतेशाम हुसैन, लोकभारती, इलाहबाद
9. रवीन्द्रनाथ की कविताएँ, साहित्य अकादमी, दिल्ली
10. रवीन्द्र कविता कानन, निराला, राजकमल, दिल्ली
11. रवीन्द्र साहित्य के हिंदी अनुवादों का अनुशीलन, शकुंतला मिश्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

पत्र-12 भारतीय काव्यशास्त्र

पाठ्यक्रम का उद्देश्य एवं परिणाम: इस पत्र के अध्ययन के उपरांत छात्र भारतीय काव्यशास्त्र की प्रमुख अवधारणाओं की सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक समझ विकसित करेंगे। वे रीतिकालीन कवियों के काव्यचिंतन से परिचित होकर साहित्यिक अभिव्यक्ति की सूक्ष्मताओं को जान सकेंगे। यह ज्ञान न केवल उनकी साहित्यिक समीक्षा क्षमता को समृद्ध करेगा, बल्कि प्रतियोगी परीक्षाओं एवं शैक्षणिक गतिविधियों में भी सहायक सिद्ध होगा।

पाठ्यविषय : -

1. काव्यशास्त्र काव्य-लक्षण, काव्य- हेतु, काव्य- प्रयोजन, काव्य के प्रकार
2. रस सिद्धांत, रस का स्वरूप, रस- निष्पति, रस के अंग, साधारणीकरण, सहृदय की अवधारणा
3. अलंकार-सिद्धांत, मूल स्थापनाएँ, अलंकारों का वर्गीकरण
4. रीतिसिद्धांत- रीति की अवधारणा, काव्यगुण, रीति एवं शैली, रीति सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ
5. वक्रोक्ति सिद्धांत - वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति के भेद, वक्रोक्ति एवं अभिव्यंजनावाद
6. ध्वनिसिद्धांत, स्वरूप, ध्वनि सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ, ध्वनि के प्रमुख भेद, गुणीभूत व्यंग्य
7. औचित्य सिद्धांत, प्रमुख स्थापनाएँ, औचित्य के भेद
8. रीतिकालीन कवियों का काव्यचिंतन

संदर्भ ग्रन्थ : -

1. भारतीय साहित्यशास्त्र - बलदेव उपाध्याय
2. भारतीय साहित्यशास्त्र, गणेश त्र्यम्बक देशपाण्डेय, पापुलर बुक डिपो, मुंबई
3. संस्कृत आलोचना - बलदेव उपाध्याय
4. काव्यशास्त्र – भगीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
5. भारतीय काव्यशास्त्र के नए क्षितिज – राममूर्ति त्रिपाठी, राजकमल, दिल्ली
6. संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास – पी. वी. काणे, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली

पत्र-13 पाश्चात्य काव्यशास्त्र

पाठ्यक्रम का उद्देश्य एवं परिणाम: इस पत्र के अध्ययन के उपरांत छात्रों में पाश्चात्य काव्यशास्त्र की प्रमुख अवधारणाओं की सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक समझ विकसित होगी। वे पाश्चात्य कवियों के काव्यचिंतन से परिचित होकर साहित्यिक अभिव्यक्ति की सूक्ष्मताओं को जान सकेंगे। यह ज्ञान न केवल उनकी साहित्यिक समीक्षा क्षमता को समृद्ध करेगा, बल्कि प्रतियोगी परीक्षाओं एवं शैक्षणिक गतिविधियों में भी सहायक सिद्ध होगा।

पाठ्यविषय : -

1. प्लेटो : काव्यसिद्धांत
2. अरस्तू – अनुकरण सिद्धांत, त्रासदी, विरेचन
3. लोंजाइनस – उदात्त की अवधारणा
4. ड्राइडेन के काव्यसिद्धांत
5. वड्र्सवर्थ : काव्यभाषा का सिद्धांत
6. कॉंलरिज: कल्पना सिद्धांत और ललित कल्पना
7. मैथ्यू आर्नल्ड: समस्त काव्यालोचन
8. टी. एस. इलियट - परंपरा की परिकल्पना और वैयक्तिक प्रज्ञा, निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत, वस्तुनिष्ठ समीकरण
9. आइ. ए. रिचड्र्स: मूल्य सम्प्रेषण, काव्यभाषा, व्यावहारिक आलोचना
10. सिद्धांत और वाद; आभिजात्यवाद, स्वच्छंदतावाद, अभिव्यंजनावाद, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषण तथा अस्तित्ववाद
11. आधुनिक समीक्षा की विशिष्ट प्रवृतियाँ – संरचनावाद, शैलीविज्ञान, विखंडनवाद, उत्तर आधुनिकतावाद

संदर्भ ग्रन्थ : -

1. पाश्चात्य समीक्षा दर्शन, जगदीशचंद्र जैन, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी
2. पाश्चात्य काव्यशास्त्र, देवेन्द्रनाथ शर्मा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
3. पाश्चात्य काव्यशास्त्र, तारकनाथ बाली
4. पाश्चात्य साहित्य, निर्मला जैन, राधाकृष्ण, दिल्ली
5. आलोचक और आलोचना, बच्चन सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
6. पाश्चात्य काव्यशास्त्र का संक्षिप्त विवेचन, इन्द्र नाथ चौधुरी, सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली

पत्र-14 हिंदी आलोचना

पाठ्यक्रम का उद्देश्य एवं परिणाम: छात्र साहित्यिक आलोचना की प्रवृत्तियों, परंपराओं और सिद्धांतों की गहन समझ विकसित करेंगे। वे भारतीय एवं पाश्चात्य आलोचना के प्रमुख विचारकों के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन कर साहित्यिक पाठों का विवेचन करने में सक्षम होंगे। यह अध्ययन उनकी विश्लेषणात्मक क्षमता को परिपक्क बनाएगा और शोध, लेखन तथा प्रतियोगी परीक्षाओं में उन्हें समर्थ बनाएगा।

पाठ्यविषय : -

1. शुक्लयुगीन आलोचना: महावीर प्रसाद द्विवेदी, रामचन्द्र शुक्ल, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
2. छायावादी कवियों की आलोचना : प्रसाद, निराला, पन्त और महादेवी
3. शुक्लोत्तर आलोचना: हज़ारी प्रसाद द्विवेदी, नंददुलारे वाजपेयी, नगेंद्र, नलिन विलोचन शर्मा, देवीशंकर अवस्थी, विजयदेव नारायण साही, रामस्वरूप चतुर्वेदी
4. प्रगतिवादी आलोचना : शिवदान सिंह चौहान, प्रकाशचंद्र गुप्त, मुक्तिबोध, रामविलास शर्मा, नामवर सिंह, शिवकुमार मिश्र, मैनेजर पाण्डेय
5. विमर्श केन्द्रित आलोचना: दलित विमर्श, स्त्री विमर्श एवं आदिवासी विमर्श

संदर्भ ग्रन्थ : -

1. हिन्दी आलोचक : शिखरों का साक्षात्कार, रामचंद्र तिवारी, लोकभारती, इलाहावाद
2. हिन्दी आलोचना, विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल, दिल्ली
3. हिन्दी आलोचना का विकास, नन्दकिशोर नवल, राजकमल, दिल्ली
4. समकालीन हिन्दी आलोचना, परमानन्द श्रीवास्तव, साहित्य अकादमी, दिल्ली
5. आलोचक और आलोचना, बच्चन सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
6. रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना, रामविलास शर्मा, राजकमल, दिल्ली
7. दूसरी परंपरा की खोज, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
8. दलित साहित्य की अवधारणा, कँवल भारती, बोधिसत्व प्रकाशन, रामपुर
9. दलित साहित्य : एक मूल्यांकन, चमनलाल, राजपाल एंड संस, दिल्ली

पत्र-15 डिज़र्टेशन / प्रोजेक्ट वर्क

पाठ्यक्रम का उद्देश्य एवं परिणाम: इस शोध-पत्र के माध्यम से विद्यार्थी स्वतंत्र अनुसंधान की प्रक्रिया, उसकी संरचना एवं पद्धतियों से परिचित होंगे। वे साहित्यिक स्रोतों एवं संदर्भ ग्रंथों के समुचित प्रयोग के साथ किसी एक विशिष्ट साहित्यिक पक्ष का गहन विश्लेषण करना सीखेंगे। इससे उनके भीतर आलोचनात्मक दृष्टिकोण, तार्किक लेखन एवं उच्च शोध क्षमता का विकास होगा।

पाठ्यक्रम संरचना

1. **सिद्धांत पक्ष**: शोध समस्या की पहचान और परिभाषा, शोध डिजाइन, डेटा संग्रह, डेटा विश्लेषण, शोध रिपोर्ट, शोध नैतिकता आदि की सामान्य जानकारी

2. **व्यवहार पक्ष**:

a. विषय का चयन: विद्यार्थी को किसी मान्य विषय पर शोध करना होगा, यथा लेखक-केंद्रित, विधा-केंद्रित, प्रवृत्ति-केंद्रित, भाषा/शैली केन्द्रित, तुलनात्मक

b. संरचना: भूमिका, विषय की प्रासंगिकता, उद्देश्य और महत्व, पूर्ववर्ती कार्य, शोध विधियाँ

c. शोध शीर्षक: 2 से 3 अध्याय जैसे लेखक की पृष्ठभूमि, रचनाओं का विश्लेषण, समाज और साहित्यिक प्रभाव

d. निष्कर्ष: मुख्य निष्कर्षों का सार, शोध की सीमाएँ, भविष्य में शोध के लिए संभावनाएँ

e. संदर्भ ग्रंथ: प्राथमिक स्रोत, द्वितीयक स्रोत (आलोचना, लेख, शोध पत्र)

f. अंक विभाजन का मानक: विषय चयन की मौलिकता, शोध पद्धति का प्रयोग, भाषा एवं प्रस्तुति शैली, विषय की गहराई व विश्लेषण, निष्कर्ष व निष्पादन, मौखिक परीक्षा, शब्द सीमा10,000, भाषा- हिंदी, उद्धरण शैली: MLA या विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित (उदाहृत विषय-अज्ञेय के उपन्यासों में आधुनिक चेतना, केदारनाथ सिंह के काव्य में पर्यावरण चेतना)

संदर्भ ग्रन्थ : -

1. शोध प्रविधि, विनय मोहन शर्मा, मयूर प्रकाशन, दिल्ली

पत्र-16 तुलसीदास (वैकल्पिक-1)

पाठ्यक्रम का उद्देश्य एवं परिणाम: इस पत्र के अध्ययन के बाद छात्र हिंदी के महत्वपूर्ण मध्यकालीन कवि तुलसीदास एवं उनकी रचनाओं से परिचित होंगे, जिससे उनकी साहित्यिक समृद्धि में वृद्धि होगी। साथ ही, इस जानकारी का उपयोग वे साहित्यिक गतिविधियों के अतिरिक्त विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में भी कर सकेंगे।

पाठ्यविषय : -

1. रामचरितमानस, गीताप्रेस, अयोध्याकांड
2. विनय पत्रिका, गीताप्रेस, पद संख्या-1,9,19,21,30,32,41,45,48,65,66,68,72,73, 78, 79, 91, 105, 107, 111, 114
3. कवितावली, गीताप्रेस, उत्तरकांड
4. गीतावली, गीताप्रेस, बालकांड- 5,7,18,23,29,35,47,57,76,106

संदर्भ ग्रन्थ : -

1. गोस्वामी तुलसीदास - रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2. तुलसीदास - माताप्रसाद गुप्त
3. रामकथा : उत्पति और विकास - फादर कामिल बुल्के, हिन्दी परिषद् प्रयाग ।
4. तुलसीदास और उनका युग – राजपति दीक्षित
5. तुलसीदास - ग्रियर्सन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
6. तुलसी आधुनिक वातायन से – रमेश कुंतल मेघ
7. तुलसीदास – संपा. वासुदेव सिंह, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद

पत्र-16 जयशंकर प्रसाद (वैकल्पिक-2)

पाठ्यक्रम का उद्देश्य एवं परिणाम: इस पत्र के अध्ययन के बाद छात्र हिंदी के महत्वपूर्ण कवि जयशंकर प्रसाद एवं उनकी रचनाओं से परिचित होंगे, जिससे उनकी साहित्यिक समृद्धि में वृद्धि होगी। साथ ही, इस जानकारी का उपयोग वे साहित्यिक गतिविधियों के अतिरिक्त विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में भी कर सकेंगे।

पाठ्यविषय : -

1. काव्य : आँसू (संपूर्ण), लहर: प्रलय की छाया, अशोक की चिंता, पेशोला की प्रतिध्वनि, शेरसिंह का शस्त्र
2. नाटक: अजातशत्रु, जनमेजय का नागयज्ञ, ध्रुवस्वामिनी
3. उपन्यास : कंकाल, तितली
4. कहानी : भिखारिन, प्रतिध्वनि, चुड़ीवाली, मधुआ, गुण्डा
5. साहित्य चिंतन : काव्य और कला तथा अन्य निबंध

संदर्भ ग्रन्थ : -

1. जयशंकर प्रसाद - नन्ददुलारे वाजपेयी
2. जयशंकर प्रसाद : वस्तु और कला - रामेश्वर खण्डेलवाल
3. प्रसाद और उनका साहित्य - विनोदशंकर व्यास
4. प्रसाद का काव्य – प्रेमशंकर
5. प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन - जगन्नाथ प्रसाद शर्मा

पत्र-16 प्रेमचंद (वैकल्पिक-3)

पाठ्यक्रम का उद्देश्य एवं परिणाम: इस पत्र के अध्ययन के बाद छात्र हिंदी के महत्वपूर्ण रचनाकार प्रेमचंद एवं उनकी रचनाओं से परिचित होंगे जिससे उनकी साहित्यिक समृद्धि में वृद्धि होगी। साथ ही, इस जानकारी का उपयोग वे साहित्यिक गतिविधियों के अतिरिक्त विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में भी कर सकेंगे।

पाठ्यविषय : -

1. उपन्यास: सेवासदन,रंगभूमि,कर्मभूमि
2. नाटक : कर्बला
3. आलोचना : साहित्य का उद्देश्य
4. कहानियाँ – कफन, पूस की रात, शतरंज के खिलाड़ी, सवा सेर गेहूँ, सदगति, ठाकुर का कुआँ, पंच परमेश्वर, ईदगाह, दूध का दाम, दो वैलों की कथा

संदर्भ ग्रन्थ : -

1. प्रेमचंद घर में, शिवरानी देवी
2. प्रेमचंद : कलम का सिपाही – अमृत राय
3. प्रेमचंद और उनका युग, रामविलास शर्मा
4. प्रेमचंद : जीवन, कला एवं कृतित्व, हंसराज रहबर
5. प्रेमचंद : एक अध्ययन, राजेश्वर गुरु
6. प्रेमचंद : एक विवेचन – इंद्रनाथ मदान

पत्र-16 अस्मितामूलक विमर्श (वैकल्पिक-4)

पाठ्यक्रम का उद्देश्य एवं परिणाम: इस पत्र के अध्ययन से छात्रों को अस्मिताओं का विश्लेषणात्मक ज्ञान होगा अस्मिता की निर्मिति, विभेदन, इतिहास और अन्य अवधारणाओं की समझ विकसित होगी

पाठ्यविषय : -

1. अस्मिता की अवधारणाएँ और सिद्धांत,व्यक्ति-अस्मिता और सामूहिक अस्मिता, हाशिए की अस्मिताएँ, अल्पसंख्यक अस्मिताएँ
2. जेंडर अस्मिता और यौन-अस्मिता, जेंडर, भाषा और साहित्य
3. दलित अस्मिता, अंबेडकर और उत्तर अंबेडकर विचार, दलित आंदोलन, दलित साहित्य और भाषा, दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र
4. आदिवासी साहित्य की अवधारणा, ऑरेचर और आदिवासियत, उपनिवेशीकरण की प्रक्रिया और आदिवासियों का शोषण, विस्थापन और विलोपन,
5. हिंदी के प्रमुख आदिवासी कवियों का अध्ययन (रामदयाल मुंडा, महादेव टोप्पो, निर्मला पुतुल, अनुज लुगुन)
6. हिंदी के प्रमुख आदिवासी गद्यकरों का अध्ययन (राम दयाल मुंडा, वंदना टेटे)

सन्दर्भ ग्रन्थ : -

1. हिंदी में आदिवासी साहित्य, इसपाक अली
2. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, ओमप्रकाश वाल्मीकि, वाणी, दिल्ली
3. दलित विमर्श, श्योराज सिंह बेचैन, अनामिका पब्लिशर्स, दिल्ली
4. स्त्रीविमर्श का कालजयी इतिहास, सं. संजय गर्ग, सामायिक प्रकाशन, दिल्ली
5. वाचिकता, वंदना टेटे, राधाकृष्ण, दिल्ली
6. दलित साहित्य : एक अंतर्यात्रा, बजरंग बिहारी तिवारी, नवारुण, गाजियाबाद
7. आदिवासी कथा : महाश्वेता देवी
8. आदिवासी दर्शन और साहित्य, वंदना टेटे, नोतन प्रेस डॉट कॉम, भारत
9. आदिवासी लेखन, रमणिका गुप्ता, सामायिक प्रकाशन, दिल्ली
10. जनजातीय नवजागरण, राहुल सिंह, राजकमल, दिल्ली
11. आदिवासी अस्तित्व और झारखंडीय अस्मिता के सवाल, रामदयाल मुंडा, रुम्बुल, रांची
12. आदिवासी साहित्य: परम्परा और प्रयोग, वंदना टेटे, केरकेट्टा फाउंडेशन, रांची
13. औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्ति, न्युगी वा धवंगो,ग्रन्थ शिल्पी, दिल्ली

पत्र-16 कथेतर गद्य (वैकल्पिक-5)

पाठ्यक्रम का उद्देश्य एवं परिणाम: हिंदी साहित्य से सम्बंधित कथेतर गद्य विधाओं के इतिहास का विश्लेषण कर सकेंगे एवं विभिन्न लेखकों और उनकी कृतियों से परिचित हो सकेंगे

पाठ्यविषय : -

1. आत्मकथा एवं जीवनी
   ओम प्रकाश वाल्मीकि : जूठन
   विष्णु प्रभाकर : आवारा मसीहा
2. रेखाचित्र एवं संस्मरण
   महादेवी वर्मा : स्मृति की रेखाएँ
   जगदीशचंद्र माथुर : जिन्होंने जीना जाना
3. यात्रावृत्तांत एवं पत्र साहित्य
   यात्रावृत्तांत : अज्ञेय : एक बूँद सहसा उछली
   पत्र साहित्य : दिनकर के पत्र
4. रिपोर्ताज : ऋण जल धन जल
5. एक साहित्यिक की डायरी

सन्दर्भ ग्रन्थ : -

1. आधुनिक गद्य की विविध विधाएं, उदयभानु सिंह, वाणी, दिल्ली
2. हिंदी रिपोर्ताज, वीरपाल वर्मा, कुसुम प्रकाशन, मुजफ्फरनगर
3. हिंदी का गद्य साहित्य, रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
4. महादेवी का गद्य साहित्य, मुक्तेश्वर नाथ तिवारी, अमन प्रकाशन, कानपूर
5. दिनकर के पत्र, कन्हैयालाल फुलफगर, वाणी, दिल्ली
6. हिंदी गद्य : विन्यास और विकास, रामस्वरूप चतुर्वेदी, राजकमल, दिल्ली
7. साहित्यिक विधाएं : सैद्धांतिक पक्ष, मधु धवन, राजकमल, दिल्ली
8. फणीश्वरनाथ रेणु, मन्मथ नाथ गुप्त, राजकमल, दिल्ली

पत्र-16 व्यावसायिक हिंदी (वैकल्पिक-6)

पाठ्यक्रम का उद्देश्य एवं परिणाम: अध्ययन के उपरांत छात्रों में संचार की सैद्धांतिक,अनुवाद की सैद्धांतिक और माध्यमों का विश्लेषणात्मक ज्ञान, अनुवाद के क्षेत्रों, सिनेमा निर्माण प्रक्रिया की समझ विकसित हो सकेगी

पाठ्यविषय : -

1. जनसंचार, परिभाषा, स्वरूप, महत्त्व, प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक एवं सोशल मिडिया
   आजादी पूर्व हिंदी पत्रकारिता, आजादी बाद हिंदी पत्रकारिता
2. अनुवाद: स्वरूप, क्षेत्र एवं प्रकार, अनुवाद और भाषा का संबंध, अनुवाद और रोज़गार, अनुवाद की सीमाएँ एवं समस्या, काव्यानुवाद एवं गद्यानुवाद, कार्यालयी अनुवाद, मीडिया और अनुवाद
3. प्रयोजनमूलक हिंदी अभिप्राय और क्षेत्र, अर्थ-विस्तार, आवश्यकता और विशेषताएँ
4. हिंदी की भूमिकाएँ: राजभाषा, संपर्क भाषा, साहित्यिक भाषा, संचार भाषा, माध्यम भाषा
5. शब्दावली-निर्माण, वर्गीकरण, शब्द संपदा और उसका मानकीकरण
6. हिंदी सिनेमा का स्वरूप, सिनेमा और साहित्य का संबंध, कला सिनेमा, पटकथा लेखन, इंटरनेट और 21वीं सदी में सिनेमा के नए रूप, साहित्यिक कृतियों पर बनी हिंदी फिल्में, समान्तर सिनेमा विशेष अध्ययन गोदान, शतरंज के खिलाड़ी, तीसरी कसम, रजनीगंधा

सन्दर्भ ग्रन्थ : -

1. मीडिया का अंडरवर्ल्ड: दिलीप मंडल
2. समाचार-पत्र प्रबंधन : गुलाब कोठारी
3. सूचना प्रौद्योगिकी और समाचार-पत्र : रवीन्द्र शुक्ला
4. जनसंचार सिद्धांत और अनुप्रयोग : विष्णु राजगढ़िया
5. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया : अजय कुमार सिंह
6. न्यू मीडिया इंटरनेट की भाषायी चुनौतियाँ और सम्भावनाएँ : आर. अनुराधा
7. पटकथा लेखन, मनोहर श्याम जोशी
8. दो गुलफामों की तीसरी कसम, अनंत, कीकट, पटना
9. सिनेमा के बारे में, मुननीनसरीन कबीर, राजकमल, दिल्ली
10. अनुवाद सिद्धांत और व्यवहार, मंजुला दास, पराग प्रकाशन, दिल्ली

पत्र-16 लोक साहित्य (वैकल्पिक-7)

पाठ्यक्रम का उद्देश्य एवं परिणाम: छात्रों में लोक और लोक-साहित्य का विश्लेषणात्मक ज्ञान, लोक की अवधारणा और लोक-साहित्य की सैद्धांतिक समझ का विकास होगा

पाठ्यविषय : -

1. लोक-साहित्य, हिंदी लोक-साहित्य स्वरूप, लोकधर्म, लोक और शास्त्र
2. लोक-साहित्य और शास्त्रीय साहित्य का अंतस्संबंध, लोक-साहित्य में इतिहास और समकाल की अनुगूँज, लोक-संबंधी समकालीन बहसें, भूमंडलीकरण के दौर में लोक का पुनरोदय
3. हिंदी : लोक-संस्कृति क्षेत्र और लोक-शैलियाँ, लोकगीत, देवीगीत, संस्कारगीत, ऋतुगीत, श्रमगीत लोकगाथा, लोकआख्यान, रामलीला, नौटंकी, स्वांग, बिदेसिया
4. बोली, भाषा, लोकभाषा, देशी शब्द, मुहावरे, कहावतें, लोक संस्कृति, लोकाचार, लोक-विश्वास, लोकोत्सव

सन्दर्भ ग्रन्थ : -

1. लोक का आलोक, सं. पीयूष दहिया
2. लोक साहित्य का लोकपक्ष: सिधांत और व्यवहार, हरिश्चंद्र मिश्र, वाणी, दिल्ली
3. लोक साहित्य सन्दर्भ, हरिश्चंद्र मिश्र, सांस्कृतिक परिषद्, भोपाल
4. लोकसाहित्य की भूमिका, कृष्णदेव उपाध्याय, लोकभारती, इलाहाबाद
5. लोकसाहित्य और संस्कृति, राधेश्याम सिंह, लोकभारती, इलाहाबाद
6. लोकसंस्कृति और इतिहास, बद्रीनारायण, लोकभारती, इलाहाबाद
7. लोक साहित्य, सुरेश गौतम, संजय, वाराणसी
8. लोकगीत पाठ और विमर्श, सत्यप्रिय पाण्डेय, स्वराज, दिल्ली

पत्र- 16 : रंगमंच और हिंदी नाटक((वैकल्पिक-8)

इस पत्र के अध्ययन के उपरांत छात्र रंगमंच एवं प्रमुख हिंदी नाटकों का विश्लेषण कर सकेंगे साथ ही प्राप्त ज्ञान का उपयोग वे रंगमंचीय ज्ञान के संवर्धन में करेंगे

पाठ्यविषय : -

1. पारंपरिक रंगमंच का स्वरूप, प्रमुख पारंपरिक नाट्य-रूप : रामलीला, रास, स्वांग, नौटंकी, ख्याल आदि
2. निर्देशन, अभिनय, सहायक भूमिकाएँ, संगीत
3. भारतेंदु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद, मोहन राकेश का रंगमंच संबंधी चिंतन
4. हिंदी रंगमंच का इतिहास : व्यावसायिक (पारसी थियेटर), अव्यावसायिक, (पृथ्वी थियेटर, इप्टा) पेशेवर, शौकिया, आजादी के बाद का रंगमंच, नुक्कड़ नाटक
5. हिंदी नाटक एक और द्रोणाचार्य- शंकर शेष, अलग-अलग रास्ते- उपेंद्रनाथ अश्क, आठवाँ सर्ग- सुरेन्द्र वर्मा, पंचतंत्र- दयाप्रकाश सिन्हा का अध्ययन

सन्दर्भ ग्रन्थ : -

1. नाटक: राधावल्लभ त्रिपाठी
2. रंगदर्शन: नेमिचंद जैन
3. पारसी हिंदी रंगमंच, लक्ष्मीनारायण लाल
4. रंगमंच और नाटक की भूमिका, लक्ष्मीनारायण लाल
5. भारत की हिंदी नाट्य संस्थाएँ एवं नाट्यशालाएँ: विश्वनाथ शर्मा
6. हिंदी नाटक उद्भव और विकास, दशरथ ओझा, राजपाल एंड संस, दिल्ली
7. प्रसादोत्तर कालीन नाटक, भूपेंद्र कलसी, लोकभारती, इलाहाबाद
8. हिंदी नाटक सिद्धांत और विवेचन, गिरीश रस्तोगी
9. रंगमंच के सिद्धांत, देवेन्द्रनाथ अंकुर, राजकमल, दिल्ली